वैदिक प्राणी विज्ञान एवं गो महिमा

*डॉ. चन्द्र प्रभा पारीक

मनु महर्षि के अनुसार –

''वेदोऽखिलो धर्मभूलम्''[1]

अर्थात् वेद ही सब धर्मों का मूल है और सर्वस्वय ज्ञान वेद में निहित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मानना है कि वेदों का ज्ञान देने वाला परमात्मा है जिसने आदि ऋषियों के हृदय में वैदिक ज्ञान का प्रकाशन किया है।[2]

वैदिक शब्द की व्याख्या वामन आप्टे के अनुसार –

''वेदं वेत्त्यधीते ता अत्र वेदेषु विहितः अर्थात् जो पवित्र है, धर्मात्मा है।''[3]

प्राणी का शाब्दिक अर्थ गतिमान रूप में उपस्थित है। विज्ञान से अभिप्राय है ज्ञान, बुद्धिमता, प्रज्ञा 'विज्ञान' उसको कहते हैं जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों का यथावत उपयोग ले।[4]

वैदिक दृष्टिकोण से सृष्टि प्रक्रिया में पुरूष, अश्व और गो को मेध्य पवित्र के प्रतीक रूप में अपनाया है। गो शब्द पशुविशेष के रूप में रूढ़ हो गया है।

यास्क ने गो के गतिमान धर्म के अनुरूप इसे पृथ्वी, वाक्, स्तोता, अन्न, गो (पशु) विशेष आदित्य, चर्म, श्लेष्मा तथा ज्यां अर्थों में प्रयुक्त माना है।[5]

सर्वप्रथम ऋग्वेद में गो सूक्त में गो (गाय) के प्रति भाव इस प्रकार प्रतिष्ठित हुई।

''सुखकर वायु बहे गौओं की ओर
बलकारी औषधि का भक्षण करें, नित्य का ठोर
प्राण प्राप्ति कर पोषक जल का करे नित्य ही पान
रूद्र ! पद्धति अन्नस्वरूपा को सुख का दो दान।
पितरों और सभी देवों की सम्मति का कर मान
मुझे प्रजा पालक स्रष्टा ने दिया धेनु का दान
कल्याणी गौओं को ब्रज में पहुँचाओं हे देव
गो सतति का जिससे होत रहे वह 'विस्तार'[6]

आर्य जाति में सदा गो की प्रतिष्ठा और पूजा होती आई है। ऋग्वेद में गो के मातृत्व, दिव्यत्व आदि ऋणों का उल्लेख है।ऋग्वेद में गोधन का बहुधा उल्लेख इस रूप में मिलता है।

गोभिः रचिं पप्रथत्।[7]

डॉ. ए.ए. मैक्डोनल ने लिखा है कि ''ऋषि लोग श्रोताओं पर गौ को अध्ज्या (अवध्य) बताकर उसकी अहिंसाथता का भाव जताते देखे जाते है।.....अथर्ववेद में तो गो की एक पवित्र पशु के रूप में पूजा तक प्रचलित हो चुकी है।[8]

''माता रूदाणां दुहिता वसूनां स्वासादित्याममृतरय नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितेषु जनाय या गामनागां अदितिवधिष्ट।''[9]

यजुर्वेद में कहा गया है गो से हमें दूध, घी आदि पदार्थ प्राप्त होते हैं जिससे प्रजा की रक्षा होती है उसको कभी मत मारो।[10]

यजुर्वेद में गो को अदिति और विराज् कहा गया है।

''विराजो वा एतद् रूपं यद गो''

सामवेद में भी गो की महिमा व्यक्त करते हुए कहा है जो ऋतु की धुरी है। 'परमव्योम' तक गो की गति है वह यज्ञ का पोषण करती है।

अथर्ववेद के भूमिसूक्त में मातृ भूमि की गायों, अश्वों और अन्नों से भरी हुई बताया गया है।.....दूध, दही, घृतादि के बिना गृहस्थ जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए वेदों में उत्तम गृहस्थ जीवन का शब्द चित्र खींचते समय गो का स्मरण किया गया है।

यह इस मंत्र से स्पष्ट होती है।

''गवांमश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृभिवी नो दधातु''[13]

गौओ की प्राप्ति के साथ विजय प्राप्त करने की प्रार्थना अथर्ववेद के इस प्रेरणास्पद मंत्र में मिलती है।

कूतं में दक्षिणे हस्ते जयो में सत्य आहितः।

गोजिद भूया समश्वाजहनंजपो हिरण्र्याजत्।[14]

इसलिए ही लोकदेवताओं के रूप में पाबूजी, तेजाजी, जाम्भोजी, रामदेवजी आदि ने गो रक्षा के लिए अपने प्राण दांव पर लगा दिये।

भारत में गो–चारण को पवित्र व पुण्यदायक माना जाता है। राजस्थान में चरणोट (चरने योग्य भूमि) राज्य की ओर से कृषि योग्य भूमि में से छुडवाई जाती थी। पं. बलदेव उपाध्यय ने चरने के मैदान को गोष्ठ माना है।[15] अथर्ववेद में मनुष्य मात्र को गो के वत्सप्रेम के समान, समाज्जस्य पूर्वक परस्पर प्रीति करने का उपदेश दिया गया है।

अन्यो अन्यमभि हर्यतवत्सं जात इताध्न्या।[16]

धर्मपरायण भारतीय प्रत्येक पवित्र कार्य में गोदन आवश्यक मानते हैं। अथर्ववेद में भी एक मंत्र में गोदान में प्रवृत्त होने वाली वाणी के लिए आकांक्षा प्रकट की गई है।

गोसनि वाचमुदेयम्।[17]

स्वतन्त्रता आन्दोलन में श्री महात्मा गांधी, विनोबा भावे, मदनमोहन मालवीय, पुरूषोत्तम दास टण्डन तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने आन्दोलन में गो रक्षा को मुख्य बिन्दु बनायाः

गाय के प्रति भारतीयों की श्रद्धा भावना न तो मनोवैज्ञानिक कौतुहल ही है और न निराधार विश्वास की बहक ही। इसका आध्यात्मिक सिद्धांत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह महान् भारतीय धर्म का अंग है।[18]

गाय की धार्मिक महत्ता ही नहीं कृषि प्रधान भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल भी यही है। आज के समय में कृषि उद्योग, ऊर्जा, पर्यावरण एवं आर्थिक दृष्टि से गौ का महत्व और बढ़ गया है। दयानन्द सरस्वती ने 'गोकरूणानिधी' में गौ के आर्थिक पहलू की विवेचना की है।

गौ के गोबर, मूत्र, दुग्ध, घृत और दधि आदि सभी पदार्थ परम पावन, आरोग्यप्रद, तेजप्रद, आयुवर्धक तथा बलवर्धक माने जाते है, यही कारण है कि आर्य जाति के प्रत्येक श्रौत स्मार्त शुभकर्म में पंचगव्य और पंचामृत का विधान अनादिकाल से प्रचलित और मान्य है।[19]

इस संसार में गाय ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसका सर्वांग उपयोग है।

अतः गो की सेवा सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्प लेना हमारा राष्ट्रीय गौरव एवं सम्मान ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के उज्जवल भविष्य के निमित्त प्रत्येक देशवासी का परम पावन कर्त्तव्य है। गो प्राप्ति की अभिलाषा स्वाभाविक ही है।

''गावो में अग्रतः सन्तु।
गावो में पृष्ठतः सन्तु
गावो में सर्वतः सन्तु।
गवा मध्वे वसाम्यहम्।''[20]

***सह आचार्य**
इतिहास विभाग
श्री आर.के.पाटनी राजकीय महाविद्यालय किशनगढ़
अजमेर (राज.)

संदर्भ सूची

1. मनु संहिता 6/2
2. वेद और इतिहास – सं. धर्मवीर पृ. 127
3. संस्कृत हिन्दी कोश – वामन आप्टे
4. दयानन्द ग्रंथमाला खण्ड–2 ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृ. 284
5. निरूक्त 2 (21) 5–6

6. ऋग्वेद 10 (169) 1–4 पद्यानुवाद
7. ऋग्वेद 10 (169) 1–4 पद्यानुवाद
8. बद्रीप्रसाद पंचोली ऋग्वेद में गो तत्त्व पृ. 42
9. ऋग्वेद 8 (101) 15
10. यजुर्वेद 13 (43)
11. यजुर्वेद 13 (43)
12. अथवर्वेद 7 (60) 5
13. अथवर्वेद 7 (60) 5
14. अथवर्वेद 7 (50) 6
15. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – वर्मा पृ. 456
16. अथवर्वेद 3 (30) 1
17. अथवर्वेद 7 (20) 10
18. बद्री प्रसाद पंचोली 'ऋग्वेद में गोतत्त्व' पृ. 388
19. श्री कल्याण वेद–कथांड, पृ. 138
20. पद्मपुराण कल्याण वर्ष 77 स 8